इस्लाम की शीतल छाया

सैयद हामिद अली

अनुवाद
नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह दयावान, कृपाशील के नाम से

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे इंसानों का मालिक और पालनहार है और सलामती और उसकी कृपा हो उसके उन बन्दों पर जिन्होंने इंसानों तक उसका वह दीन पहुंचाया, जो लोक और परलोक की सफलता का एक मात्र साधन है।

बुज़ुर्गो, भाइयो, बहिनो और बेटियो!

ईश्वरीय ग्रन्थ पवित्र क़ुरआन को खोलते ही हमारे सामने सबसे पहली आयत यह आती है –

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' अर्थात् 'अल्लाह कृपाशील, दयावान के नाम से।'

क़ुरआन में यह आयत एक सौ चौदह बार आयी है। इस आयत के तुरन्त बाद यह आयत है –

'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन', 'अर्थात् शुक्र और प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे संसार वालों का रब और पालनहार है।'

–फ़ातिहा : १

क़ुरआन मजीद में ख़ुदा की कृपा, दया और पालन-क्रिया का उल्लेख अनेक स्थानों पर है।

अगर हम आंखें खोलकर देखें तो हमें हर ओर प्रभु की दयालुता और पालनु-क्रिया के चिह्न दिखाई देंगे। हम देखेंगे कि यह पूरा जगत् हमारे ही लिए कार्यरत है। धरती के सारे ख़ज़ाने हमारे लिए हैं। क़ुरआन में भी है –

> 'वह अल्लाह ही है जिसने धरती की सारी चीज़ें तुम्हारे लिए पैदा कीं।'
>
> –बक़रा : २९
>
> उसके उपकार गिने नहीं जा सकते। क़ुरआन में कहा गया है 'अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते।'
>
> ––इब्राहीम : ३४

परन्तु ये नेमतें उसी समय नेमतें बन सकती हैं, जबकि उनके इस्तेमाल का सही तरीक़ा हमें मालूम हो, वरना वे दुनिया और आख़िरत दोनों में हमारी तबाही और अज़ाब का कारण बन सकती हैं, जैसा कि हम आज देख भी रहे हैं। आज असीम भौतिक प्रगति के बावजूद मनुष्य अनगिनत कठिनाइयों और जटिल समस्याओं का शिकार है। अल्लाह की सबसे बड़ी कृपा यह है कि उसने हम इंसानों की रहनुमाई और मार्ग–दर्शन के लिए नबी और रसूल भेजे। अल्लाह के ये पैग़म्बर हर देश और हर जाति में आये और उन्होंने अल्लाह का वह दीन इंसानों के सामने पेश किया, जिसमें उनकी योग्यताओं, ज़िन्दगियों और ईश्वर की प्रदान की हुई तमाम नेमतों का उचित व्यय और इस्तेमाल का सही ढंग बताया गया था। सबसे आख़िर में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आये। उनके द्वारा अल्लाह ने अपना दीन पूरा कर दिया, जैसा कि क़ुरआन में आया है-

> 'आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन के रूप में पसंद कर लिया।' –माइदा : ३

मुहम्मद (सल्ल०) रहती दुनिया तक तमाम इंसानों के लिए रसूल बनाकर भेजे गये थे।

> 'हमने तुम्हें सारे मनुष्यों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है।' –सबा : २८

यह दीन जो आप (सल्ल०) लाये सारी दुनिया के लिए अल्लाह की सबसे बड़ी नेमत है। इनमें मानव–जाति के लिए न्याय और इंसाफ की गारंटी दी गई है, यही व्यापक विकास का वास्तविक आधार है। लोक–परलोक की सफलता इसी पर निर्भर करती है। इसीलिए इसके लाने वाले और लागू करने वाले रसूल को अल्लाह ने 'संसार वालों के लिए सम्पूर्ण दयालुता' की संज्ञा दी है। क़ुरआन में है –

> (हे नबी!) हमने तुम्हें तो दुनिया वालों के लिए दया बनाकर भेजा है।' –अंबिया : १०७

आइये! अब हम विचार करें कि यह दीन किस प्रकार मानव-जाति के लिए पूरी तरह दया की एक जीवन-प्रणाली है। कोई प्रणाली मानवता के लिए उसी समय पूरी तरह दया की प्रणाली बन सकती है, जब वह मानव-जाति को कुछ चीज़ें प्रदान करे उदाहरणार्थ -

१. वास्तविक स्वतंत्रता, २. आदर-सम्मान, ३. न्याय, ४. भलाइयों की स्थापना और बुराइयों का उन्मूलन, ५. व्यापक विकास, ६. सारे इंसानों की समस्त समस्याओं का समाधान, ७. मानव-एकता, ८. सुख और शांति, ९. ईश्वर की प्रसन्नता और १०. परलोक की शाश्वत सफलता - इस्लाम मानव जाति को यह सब कुछ देता है।

१. वास्तविक स्वतंत्रता

सबसे पहले स्वतंत्रता को लीजिए। इंसान ईश्वर का बन्दा पैदा होता है। ईश्वर के अलावा पैदाइशी तौर पर वह किसी का गुलाम नहीं होता। लेकिन होश संभालने के बाद वह अपने आप को ख़ानदान की रीति-रिवाज़ों और समाज के बंधनों में जकड़ा हुआ पाता है। फिर उसे ऐसे धर्म-गुरु मिलते हैं, जो स्वयं ख़ुदा बने होते हैं। उनके आगे उसे झुकना होता है। तर्क-विरुद्ध बातों को मानना होता है। अनगिनत ख़ुदाओं की पूजा करनी होती है। फिर राजा-महाराजा और शासकगण आते हैं। ये देश की पूरी आबादी को अपने चंगुल में जकड़े होते हैं और देशवासी उनके अत्याचारों और ज़ालिमाना क़ानूनों से पीड़ित होते हैं। लोकतंत्र ने दावा किया कि साम्राज्यवाद से मनुष्य को मुक्ति दिलायेगा और उसे वास्तविक स्वतंत्रता प्रदान करेगा। मनुष्य अपना शासक स्वयं बनेगा। लेकिन हुआ क्या? कुछ चालाक लोग अपनी पूंजी, अपने प्रभाव और अपने जोड़-तोड़ के नतीजे में जनता के प्रतिनिधित्व के नाम पर उनके ख़ुदा बन बैठे और अपने स्वार्थ और निजी हितों के लिए उनका शोषण करने लगे। आज पूरी दुनिया में लोकतंत्र की यही कहानी है। कम्युनिज़्म जब मैदान में आया तो उसने दावा किया कि वह पूंजीवादी शासन की लानत से मानव-जाति को मुक्ति दिलायगा।

लेकिन हुआ यह कि सर्वहारा-अधिनायक-तंत्र (Proletaryo Dictatorship) के बहाने कुछ कम्युनिस्ट नेताओं की ऐसी भयंकर और व्यापक तानाशाही क़ायम हुई, जिसकी कोई मिसाल मानव इतिहास में नहीं मिलती। इस तानाशाही ने मानव की हर प्रकार की आज़ादी, यहां तक कि सोचने और बोलने तक की आज़ादी छीन ली।

हमारे सामने फिर दुनिया की ताक़तवर क़ौमें हैं, जो कमज़ोर और पिछड़ी हुई क़ौमों को आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से गुलाम बना रही हैं। कम्युनिज़्म का अलमबरदार रूस और लोकतंत्र का अलमबरदार अमरीका दुनिया की सबसे बड़ी शक्तियां हैं, ये दोनों दुनिया के सभी राष्ट्रों को अपनी राजनैतिक और आर्थिक गुलामी में जकड़ लेना चाहती हैं[1] और इस उद्देश्य के लिए वे षड़यंत्रों, सैनिक क्रान्तियों, राष्ट्रीय नेताओं की हत्याओं, सैनिक हमलों और जनता का बड़े पैमाने पर ख़ून-ख़राबा और उनका क़त्ले आम तक से भी परहेज़ नहीं करतीं। कम्पूचिया और अफ़ग़ानिस्तान के उदाहरण हमारे सामने हैं।

ये गुलामी की वे हथकड़ियां और बेड़ियां हैं, जिन्होंने मानव-जाति को जकड़ रखा है। यदि वे कट भी जायें तो मनुष्य अपनी अंधी इच्छाओं का दास हो जायेगा, जो उसे दुनिया और आख़िरत में तबाह और बर्बाद करके रहेंगी।

क्या मनुष्य इन बोझिल और घातक दासता से मुक्ति पा सकता है? हां! उसे सच्ची स्वतंत्रता मिल सकती है, शर्त यह है कि वह अपने उस प्रभु का दास बने जिसका वह जन्मजात दास है। उसी की बन्दगी में उसके लोक और परलोक दोनों सुधर सकते हैं। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह उस प्रभु के सिवा हर गुलामी का जुआ अपने कंधे से उतार दे, चाहे वह गुलामी अपनी तुच्छ इच्छाओं की हो या परिवार की ग़लत प्रथाओं की या धर्म

---

१. अब सोवियत रूस की चौधराहट ख़त्म हो चुकी है। वहां से कम्युनिज़्म का जनाज़ा उठ चुका है।

गुरुओं और राजनैतिक नेताओं की। उसे चाहिए कि वह ईश्वर के क़ानून के विरोधी प्रत्येक क़ानून को मानने से इंकार कर दे; वह केवल उन लोगों का कहना माने जो ईश्वर का क़ानून लागू करते और ईश्वर की धरती पर ईश्वर की मर्ज़ी पूरी करते हैं।

२. आदर-सम्मान

अब आदर-सम्मान को लीजिए। व्यक्ति और समाज, दोनों के लिए यह रोटी, कपड़े और भौतिक आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण है। अपमानित जीवन से मृत्यु भली है, परन्तु हम देखते हैं कि आम आदमी को आज भी आदर-सम्मान प्राप्त नहीं है। आदर-सम्मान आज धन-दौलत और सत्ता पर निर्भर करता है। निर्धन और सत्ताहीन के हिस्से में अपमान और दुर्गति के सिवा कुछ नहीं आता। काले आज भी गोरों की दृष्टि में हीन हैं। हमारे अपने देश में छूत-छात और ऊंच-नीच का घिनौना रोग मौजूद है, जिसके शिकार करोड़ो व्यक्ति हैं। धार्मिक और राजनैतिक नेता आज भी लोगों का सिर अपने आगे झुकवाते हैं। आज भी इंसान तुच्छ वस्तुओं की उपासना कर रहा है, पाश्चात्य संस्कृति की दृष्टि में मानव मात्र सामाजिक पशु है। प्रश्न यह उठता है कि क्या कोई ऐसा धर्म है, जो मनुष्य को प्रतिष्ठा और आदर प्रदान करता हो? क्या कोई ऐसी जीवन-व्यवस्था है, जिसमें नस्ल और रंग, राष्ट्र, व्यवसाय, धन-दौलत और सत्ता के आधार पर नहीं, केवल मानवता के आधार पर मनुष्य का सम्मान हो? हां! इस्लाम ऐसी ही एक जीवन-प्रणाली है, जिसकी दृष्टि में सब मनुष्य बराबर हैं। सब एक प्रभु के बन्दे और सब एक ही जोड़े – आदम और हव्वा – की संतान हैं। व्यवसाय, नस्ल, राष्ट्र, रंग, दौलत या सत्ता के आधार पर उनमें कोई ऊंच-नीच नहीं, कोई मनुष्य देवताओं की संतान नहीं, कोई मनुष्य पैदायशी तौर पर अपवित्र नहीं। मनुष्य होने के नाते सबके सब सम्मान के अधिकारी हैं। इंसान का सिर ईश्वर के सिवा किसी और के आगे झुकने

के लिए नहीं है; क्योंकि ईश्वर के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं है। मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, फ़रिश्ते उसके आगे नतमस्तक हुए हैं, धरती पर वह जगदीश्वर का प्रतिनिधि (ख़लीफ़ा) है, उसे इतना उच्च स्थान प्राप्त हैं, जिससे उच्च स्थान की कल्पना नहीं की जा सकती।

फिर इस्लाम उन विशेषताओं और गुणों का उल्लेख करता हैऔर व्यक्ति एवं समाज में उन्हें पैदा करने की कोशिश करता है जिनके द्वारा वे दुनिया और आख़िरत दोनों में सम्मान और आदर पा सकते हैं और ईश्वर और मनुष्य दोनों के सामने सफल हो सकते हैं। वे गुण ये हैं

सत्य का ज्ञान और उस पर विश्वास, ईश्वर की बन्दगी और आज्ञापालन, उच्च स्वभाव और चरित्र, सत्य-मार्ग पर जमे रहना और दीन की स्थापना के लिए कोशिश।

इस्लाम का इतिहास साक्षी है कि अरब के गुमनाम, पिछड़े हुए निर्धन और निरक्षर लोग इस्लाम को अपनाने के फलस्वरूप इन ख़ूबियों से सुसज्जित हुए और कठोर विरोध और रुकावटों के बावजूद आदर-सम्मान और सफलताओं की चोटियों पर पहुंच गये। समय की दो विशाल शक्तियां - ईरानी सरकार और रोमन एम्पायर ने पूरी ताक़त से उन्हें कुचलने की कोशिश की, मगर वे स्वयं पराजित हुईं और इस्लाम के अलमबरदार प्रभावकारी शक्ति के रूप में दुनिया पर छाते चले गये। यह ईश्वर का वायदा था, जो पूरा हुआ। उसका वायदा आज भी मौजूद है। सम्मान और कामयाबी उसी के हाथ में है। उसका फ़ैसला है कि वह इस्लाम के सच्चे अनुयायियों को सम्मान और कामयाबी अवश्य प्रदान करेगा, जैसा कि क़ुरआन में है-

> 'सम्मान और विजय अल्लाह ही के लिए है और उसके रसूल और ईमान वालों के लिए है।'

और

> 'कमज़ोर न पड़ो और न ग़म करो और तुम ही विजयी होगे बशर्ते कि तुम ईमान वाले हो।' - आले इम्रान : १३९

३. न्याय

अब न्याय को लीजिए। न्याय ही पर व्यक्ति की सुरक्षा और विकास निर्भर करता है। इसी से समाज में अनुशासन आता है, यही समाज की उन्नति और सफलता की आधारशिला है। लेकिन सभी ज्ञानात्मक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नतियों के बावजूद आज कहीं भी न्याय दिखाई नहीं देता। व्यक्ति व्यक्तियों पर, वर्ग वर्गों पर, एक सम्प्रदाय अन्य सम्प्रदायों पर, ऊंची ज़ात वाले नीची ज़ात वालों पर और जातियां जातियों पर ज़ुल्म और अत्याचार कर रही है। साम्प्रदायिक दंगे, वर्गीय संघर्ष, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध यह सब न्याय के अभाव का ही परिणाम है। इंसान की जान, माल, प्रतिष्ठा की आज कोई क़ीमत नहीं। पूरी दुनिया षड्यंत्रों, तोड़-फोड़ और ठंडी-गर्म लड़ाइयों का शिकार है। भयंकर हथियारों की दौड़ तेज़ी से जारी है। खरबों रुपये (जिनसे करोड़ो इंसानों की बहुत-सी समस्याएं हल हो सकती थीं) हथियारों को हासिल करने और बनाने में ख़र्च हो रहे हैं। ख़ून की नदियां बह रही हैं और ईश्वर की प्रदान की हुई मूल्यवान नेमतों के भंडार युद्ध की तबाहियों की भेंट चढ़ रहे हैं। मानव-जाति की समस्त समस्याएं वास्तव में इसी ज़ुल्म और अन्याय का दुष्परिणाम हैं। आज कोई देश, कोई क़ौम, कोई पार्टी, कोई व्यवस्था न्याय का अलमबरदार नहीं। हर ओर दमन और अत्याचार पर आधारित क़ानूनों का चलन है और इसके फलस्वरूप पूरी दुनिया बिगाड़ से भर गई है। ऐसी ही दशा का चित्र क़ुरआन में इन शब्दों में प्रस्तुत किया गया है -

> 'इंसानों की अपनी ही करतूतों के कारण धरती और समुद्र में बिगाड़ फैल गया है।' -रूम : ४१

इस भयानक परिस्थिति से केवल इसी प्रकार बचा जा सकता है कि ईश्वर की उतारी हुई न्यायसंगत प्रणाली को निष्ठाभाव व सच्चे दिल से अपनायें। ईश्वर का दीन इसीलिए आता है कि आख़िरत के उद्धार से पहले दुनिया में इंसानों को न्याय और इंसाफ़ की दौलत प्राप्त हो। जैसा कि क़ुरआन में है-

'हमने अपने रसूलों को स्पष्ट निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तुला भी उतारी ताकि इंसान न्याय पर क़ायम रहें।' – हदीद : २५

यह तो सोचा भी नहीं जा सकता कि ईश्वर तनिक भी ज़ुल्म कर सकता है। वह तो सब पर अपनी रहमतों की वर्षा कर रहा है। उसका क़ानून ज़रा भी ज़ुल्म के पक्ष में नहीं, उसमें सारे मनुष्यों के लिए न्याय, सबके लिए सुख-शांति और सबके लिए हक़ व अधिकारों की सुरक्षा का प्रावधान है। इस्लाम मानव-अधिकारों को तमाम धर्मों और समस्त जीवन-प्रणालियों के मुक़ाबले में सबसे ज्यादा महत्व देता है। न्याय के सम्बन्ध में अपने-पराये, मुस्लिम-ग़ैरमुस्लिम और दोस्त-दुश्मन में कोई अन्तर नहीं करता। इसका आदेश है कि दुश्मन के साथ भी न्याय से काम लो। क़ुरआन में है-

'किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें न्याय से विचलित न कर दे। न्याय करो यही धर्म परायणता के अनुकूल बात है।' –माइदा : ८

वह सब इंसानों की जान, माल और प्रतिष्ठा का समान रूप से आदर करता है। वह एक मनुष्य का अकारण ख़ून बहाने को सारे इंसानों को क़त्ल कर देने के बराबर बताता है। इसी तरह एक मनुष्य की जान बचा लेने को सारे इंसानों की जान बचा लेने के समान ठहराता है। क़ुरआन की सूर: माइदा में है –

'इसीलिए हमने इसराईल की संतान के लिए लिख दिया था कि जिसने किसी व्यक्ति को किसी के ख़ून का बदला लेने या ज़मीन में फ़साद फैलाने के सिवा किसी और कारण से क़त्ल किया तो मानो उसने समस्त मनुष्यों की हत्या कर डाली और जिसने उसके प्राण की रक्षा की उसने समस्त मनुष्यों को जीवन प्रदान किया।' –आयत : 32

इतना ही नहीं, इस्लाम उन बातों को भी जड़ से मिटा देता है, जिनके कारण अत्याचार और बिगाड़ का बाज़ार गर्म होता है। वे बातें ये हैं, ईश्वर से निर्भीक होना, दुनिया के हितों की लालसा, मानव-अधिकारों का

तिरस्कार और अत्याचार व ज़ुल्म पर आधारित क़ानून। इस्लाम एक-एक मनुष्य के हृदय में ईश्वर का भय बिठाता है, उस ईश्वर का, जो मनुष्य के एक-एक शब्द और एक-एक हरकत को जानता है, जो मन की बातों को भी जानता है, मृत्यु के पश्चात् जिसके पास जाना है, जिसे एक-एक शब्द और तमाम कामों का हिसाब देना है, जो बुरे कामों की दर्दनाक सज़ा देता है, जिसकी पकड़ सख़्त है, जिसका प्रकोप दुनिया में भी आता है और जो लोगों और क़ौमों को विनष्ट कर देता है। दुनिया के जिन कामों के लिए मनुष्य दूसरों पर ज़ुल्म ढाता है आख़िरत की नेमतों के मुक़ाबले में उनका मूल्य कुछ भी नहीं है, आख़िरत का जीवन शाश्वत है। वहां की नेमतें असीम और हमेशा रहने वाली नेमतें हैं। वहां की यातना पीड़ादायक और स्थाई है। जो लोग ईश्वर की बन्दगी और उसके बंदों के हक़ अदा करेंगे उनके हिस्से में आख़िरत के शाश्वत जीवन में स्वर्ग की असीम और हमेशा रहने वाली नेमतें आयेंगी। जो लोग ईश्वर की अवज्ञा और उसके बंदों पर ज़ुल्म करेंगे, वे आख़िरत में ईश्वर की भीषण यातना के योग्य ठहरेंगे।

इस्लामी जीवन-व्यवस्था के दो बुनियादी पहलू हैं। एक का सम्बन्ध ईश्वर के हक़ और अधिकारों से है और दूसरे का बन्दों के हक़ और अधिकारों से। ईश्वर ने बन्दों के हक़ और अधिकारों को कुछ कम महत्व नहीं दिया है, बल्कि कुछ पहलुओं से तो बन्दों के हक़ और अधिकारों का महत्व बढ़ा हुआ है, क्योंकि अगर कोई व्यक्ति शिर्क के अलावा ईश्वर का कोई हक़ मारता है तो ईश्वर उसे माफ़ कर सकता है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति इंसानों का हक़ मारेगा तो ईश्वर उसे माफ़ न करेगा, जब तक कि वह स्वयं माफ़ न कर दे। ईश्वर के रास्ते में शहीद होने पर भी किसी के हक़ मारने का अपराध क्षमा नहीं हो सकता। अगर किसी ने मानव के हक़ मारे हैं तो आख़िरत में उसकी नेकियां उन लोगों को दे दी जायेंगी, जिनके हक़ उसने मारे हैं और उनके गुनाह अपराधी के सिर डाल दिये जायेंगे और तिरस्कार और अपमान के साथ उसे नरक में झोंक दिया जायेगा।

इस्लाम इंसानों के बनाये हुए ज़ुल्म पर आधारित क़ानूनों के बजाये ईश्वर का भेजा हुआ न्यायसंगत क़ानून इन्सानों के सामने पेश करता है और अपने अनुयायियों को आदेश देता है कि जान व माल की बाज़ी लगाकर वे इस प्रणाली को क़ायम करें ताकि दुनिया से ज़ुल्म और फ़साद दूर हो और न्याय भलाई का बोलबाला हो।

इस्लाम प्रत्येक मुसलमान का, सामूहिक रूप से हर इस्लामी राष्ट्र और मुस्लिम-समुदाय का असल कर्तव्य ठहराता है कि वे न्याय और इंसाफ़ की स्थापना के लिए उठ खड़े हों और इस संबंध में निजी हितों और परिवार-बिरादरी आदि की ज़रा भी परवाह न करें। क़ुरआन में साफ़-साफ़ कहा गया है-

> 'हे ईमान लाने वालो ! इंसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहने वाले बनो, अल्लाह के लिए (इंसाफ़ की) गवाही देते हुए, यद्यपि वह गवाही तुम्हारे अपने या माता-पिता और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो।' — निसा : १३५

४. भलाइयों की स्थापना और बुराइयों का उन्मूलन

अब चौथी चीज़ को लीजिए। सच्चाई, अमानतदारी, वायदा निभाना, न्याय, शर्म, दया, प्रेम और स्नेह, सद्व्यवहार, दानशीलता, अन्तर और वाह्य में समानता, सज्जनता, कृतज्ञता, धैर्य और दृढ़ता, क्षमाशीलता आदि ख़ूबियों का ही नाम मानवता है। जिस व्यक्ति के अन्दर ये ख़ूबियां होंगी वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी होगा और वही व्यक्ति अपने ख़ानदान, अपने समाज, अपनी क़ौम और दुनिया के लिए भलाई का कारण सिद्ध होगा। जिस समाज में ये गुण पाये जायेंगे, वही अपने देश और मानव-जाति के लिए भलाई का कारण बनेगा। यदि सम्पूर्ण मानव-जाति इन ख़ूबियों को अपना ले, तो यह दुनिया स्वर्ग बन जायेगी और इसकी सारी समस्याएं हल हो जायेंगी।

इसके विपरीत झूठ, फ़रेब, ख़यानत, वायदाख़िलाफ़ी, बेशर्मी, अत्याचार, क्रूरता, कंजूसी, कृतघ्नता, नाशुक्री, लालच, संकीर्णता, ईर्ष्या और द्वेष, वैर, प्रतिशोध इत्यादि बुराइयां जिस व्यक्ति में होंगी वह मनुष्य के रूप में जानवर होगा, हिंसक पशु होगा, राक्षस और दानव होगा और मानव के लिए अभिशाप का कारण होगा। अगर ये अवगुण किसी समाज में फैल जायें तो वह समाज अपने देश और दुनिया में बिगाड़ ही फैलायेगा और अगर मानव-जाति इन बुराइयों को अपना ले तो दुनिया में हर ओर बिगाड़ और हिंसा का बाज़ार गर्म हो जायेगा। सम्पूर्ण मानव-जाति अनगिनत जटिल समस्याओं और कठिनाइयों का शिकार हो जायेगी और यह दुनिया नरक बनकर रह जायेगी। भौतिक-विकास दुनिया को इस दुष्परिणाम से न बचा सकेगा, बल्कि वह उस बरबादी और तबाही की गति को और तेज़ कर देगा। पहले मनुष्य जब किसी पर अत्याचार करता था तो लाठी और तलवार से हमला करता था, मगर अब तो उसके पास तोप, टैंक, बम और मिसाइल जैसे अत्यन्त विनाशकारी हथियार हैं, आज वह एटम बम और हाइड्रोजन बम से पूरी दुनिया को नष्ट कर सकता है। पहले इंसान के पास लोगों को बहकाने के लिए केवल ज़ुबान और क़लम की ताक़त थी, लेकिन अब प्रेस, समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविज़न के अत्यंत प्रभावकारी साधन हैं, जो थोड़ी-सी देर में करोड़ों व्यक्तियों को बहका सकते हैं, उन्हें उत्तेजित कर सकते हैं, उन्हें बेशर्म और चरित्रहीन बना सकते हैं।

आज मानव-जाति के लिए सबसे दुखद बात यह है कि दुनिया अच्छे गुणों से बिल्कुल कोरी हो चुकी है और अवगुण और बुराइयां महामारी की तरह फ़ैल गयी हैं। यही कारण है कि व्यक्ति व्यक्ति के लिए समाज समाज के लिए और राष्ट्र राष्ट्र के लिए एक अभिशाप बन गया है और पूरी दुनिया नरक का रूप धारण कर चुकी है। इस परिस्थिति का एक विशेष कारण पाश्चात्य विचारों और धारणाओं का प्रचलन है, जिनके अनुसार, 'नैतिक मानदंड की बातें निरर्थक और व्यर्थ हैं- आदमी को हर वह काम

करना चाहिए जिसमें उसका फ़ायदा हो, जिसमें उसे मज़ा आये, जिससे उसे आनन्द प्राप्त हो।' इस का दूसरा कारण मनुष्य का ईश्वर से अलगाव और धर्म से दूरी है। पहले ईश्वर का भय मनुष्य को बुराईयों से दूर रखता था, ईश्वर से प्रेम और उसकी कृपाओं की आकांक्षा भलाई के रास्ते पर चलने की प्रेरणा देती थी। धार्मिक शिक्षाएं नैतिक मापदंडों को बुनियादी महत्व देती थीं और धार्मिक गुरुओं का उच्च आचरण और समाज-सुधार के लिए उनका कठिन प्रयास व्यक्ति और समाज को ..ष्टाचार और नैतिकता के सांचे में ढालता था। धर्म और ईश-भक्ति से दूर हो जाने के कारण अब स्थिति बिल्कुल ही बदल गई हैऔर अधिकतर लोग मन की ग़लत कामनाओं और शैतान की चालों में फंसकर रह गये हैं।

इसका तीसरा कारण यह दृष्टिकोण है कि सामाजिक जीवन और राजनीति को धर्म और धार्मिक नीतियों से अलग होना चाहिए। जबकि आज राजनीति का हाल यह है कि उसने पूरी ज़िन्दगी को अपने घेरे में ले लिया है और उसकी बागडोर ऐसे लोगों के हाथों में है जो चरित्रहीन, शिष्टता से दूर और ईश्वर को भूले हुए हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि पूरी दुनिया को आज नैतिक पतन और ऐसी जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जिसका कोई हल दिखाई नहीं देता।

यह मानव-जाति की सबसे बुनियादी समस्या है। और वही प्रणाली दयालुता प्रणाली कहलायेगी जो इस गंभीर समस्या को हल करे, जो व्यक्ति, समाज और दुनिया के तमाम लोगों को चरित्रवान बनाये, जो सत्ता के देव को शिष्टता की जंज़ीर पहनाये। मानव की अपनी गढ़ी हुई प्रणालियां इस उद्देश्य के लिए बेकार हैं। उनके यहां नैतिकता के निर्माण की न कोई योजना है न प्रोग्राम है। वे इस बात के मानने वाले हैं कि सामाजिक जीवन को धर्म और नैतिकता से दूर रखना चाहिए। साधारण धर्म भी इस उद्देश्य के लिए कुछ ज्यादा लाभकारी नहीं है, इसलिए कि वे चरित्र और नैतिकता पर बल देते भी हैं तो इसके साथ ही आमतौर से दुनिया और सामाजिक जीवन के त्याग देने की शिक्षा भी देते हैं। वे सभ्य दुनिया के संबंध में हमारा

साथ नहीं दे सकते। फिर वे कोई ऐसी जीवन-प्रणाली भी प्रदान नहीं करते, जो नैतिक सिद्धांतों पर आधारित होने के साथ-साथ जीवन-समस्याओं का हल भी हो। ऐसी जीवन-प्रणाली सिर्फ़ इस्लाम है, जो पूरी व्यक्तिगत और सामूहिक ज़िन्दगी को नैतिक सिद्धांतों के सांचे में ढालता है, जो नैतिक सिद्धांतों के आधार पर जीवन व्यतीत करने की संपूर्ण प्रणाली प्रदान करता है और जो चरित्र और आचरण के लिए निम्नलिखित शक्तिशाली प्रेरक जुटाता है-ईश्वर में आस्था, उसके भय, उससे प्रेम, उसकी असीम कृपाओं की आशा और उसके दर्दनाक अज़ाब की आशंका आदि। वह स्पष्ट रूप से बताता है कि दुनिया और आख़िरत की सफलता के लिए केवल ईमान काफ़ी नहीं है, बल्कि इसके साथ यह भी ज़रूरी है कि आदमी के कार्य अच्छे हों और दूसरों को धैर्य और सत्य पर उभारता भी हो, जैसा कि क़ुरआन में है -

'ज़माना गवाह है, निस्सन्देह इंसान घाटे में है, सिवा उन लोगों के जो ईमान लाये और अनुकूल कर्म करते रहे और एक दूसरे को सत्य और धैर्य की ताक़ीद करते रहे। -अस्र : १, २, ३

वह प्रत्येक मुसलमान और पूरे मुस्लिम-समुदाय का एक मात्र यह जीवन-उद्देश्य बताता है कि वह नेकी का हुक्म दे और बुराई से रोके। क़ुरआन में कहा गया है -

'तुम ही वह बेहतरीन समुदाय हो, जो लोगों में पैदा किया गया है। तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और ईश्वर में तुम्हारी पूरी आस्था है।' -आलेइम्रान : ११०

इस्लामी राज्य का भी मूल उद्देश्य यही है कि ईश्वर की बंदगी, मानव-अधिकारों की अदायगी और भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने की व्यवस्था करें। क़ुरआन कहता है -

'ये वे लोग हैं जिन्हें अगर हम ज़मीन में शासन प्रदान करें तो ये नमाज़ क़ायम करेंगे, ज़कात देंगे, भलाई का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे।' -हज : ४१

५. व्यापक विकास

अब पांचवीं चीज़ को लीजिए। इंसान बुद्धि और विवेक रखता है। व्यावहारिक और वैचारिक विकास उसकी एक मौलिक आवश्यकता है। वह शरीर ही नहीं आत्मा भी रखता है। उसे आध्यात्मिक विकास भी चाहिए। उसका एक नैतिक अस्तित्व भी है। उसे नैतिक विकास की आवश्यकता है। उसका एक भौतिक अस्तित्व भी है, इस पहलू से भी उसकी उन्नति आवश्यक है। वह एक सामाजिक प्राणी है और समाज में ज़िन्दगी गुज़ारता है। उसे सामाजिक विकास चाहिए। वह पैसा कमाता और ख़र्च करता है। आर्थिक दृष्टि से भी उसका विकास होना चाहिए। वह सत्ता और विधान के बिना सामाजिक जीवन नहीं गुज़ार सकता। अतः उसके लिए राजनैतिक विकास भी आवश्यक है। वह विभिन्न अभिरुचियां रखता है, उन विभिन्न अभिरुचियों का भी विकास होना चाहिए। मनुष्य को एक ऐसी जीवन-प्रणाली की ज़रूरत है, जिसमें उसका सर्वांगीण विकास हो। उसके सभी पहलुओं की उन्नति हो। क्या ऐसी कोई जीवन-प्रणाली मौजूद है? दर्शन और विज्ञान के अन्तर्गत ज्ञान और चिंतन के विकास की बात तो की जाती है, परन्तु वास्तविक ज्ञान और विश्वास के बजाय अटकल और अनुमान की वादियों में इंसान भटकता रहता है। रहे जीवन के दूसरे पहलू, तो उनके विकास की कोई बात ही नहीं की जाती। धर्म, ज्ञान और अनुसंधान पर ज़ोर देने के बजाये साधारणतः ज्ञान और बुद्धि विरुद्ध बातों पर आंखें बन्द करके विश्वास कर लेने के लिए कहते हैं। धर्मनिरपेक्ष (Secular) प्रणालियों को अध्यात्म और नैतिकता से कोई वास्ता नहीं। वे केवल आर्थिक या राजनैतिक विकास के दावे करती हैं। धर्म अध्यात्म से बहस करते हैं, परन्तु वे अध्यात्म के नाम से इंसान को एक ऐसे जंगल में छोड़ देते हैं, जहां से वह निकल नहीं पाता और सभ्य जगत् के काम का नहीं रहता। फिर यह धर्म भौतिक , आर्थिक एवं राजनैतिक विकास में मनुष्य के काम नहीं आते। यही हाल सारे धर्मों और प्रणालियों का है। वे केवल कुछ पहलुओं में मनुष्य और राष्ट्र के विकास का दावा करते हैं, समस्त पहलुओं के विकास का सामान उनके पास नहीं।

इन सबके विपरीत इस्लाम मनुष्य के व्यापक विकास की ज़मानत देता है। वह धर्म होने के बावजूद ज्ञान और अनुसंधान के आधार पर मानव-जाति का ज्ञानात्मक और वैचारिक विकास करता है और आज के वैज्ञानिक और अंतरिक्ष युग में मनुष्य की ज्ञानात्मक और वैचारिक मार्गदर्शन की योग्यता रखता है। वह प्रभु से सही संबंध स्थापित करके उसके आध्यात्मिक विकास का प्रबंध करता है। वह व्यक्ति समाज और राष्ट्र को नैतिकता के ढांचे में ढालता है और इन सब के साथ वह उसके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और अभिरुचि संबंधी विकास की सामग्री जुटाता है। इस्लाम के अलावा किसी भी प्रणाली और किसी भी धर्म को यह विशेषता प्राप्त नहीं है।

६. सारे इंसानों की समस्त समस्याओं का समाधान

अब छठी चीज़ को लीजिए। भौतिक उन्नतियों की दृष्टि से आजकल मनुष्य को जो साधन और जो सुगमताएं उपलब्ध हैं, पहले वे उसे स्वप्न में भी नहीं प्राप्त हुई थीं। इसके बावजूद आज हर व्यक्ति बहुत-सी जटिल समस्याओं का शिकार है। हर पुरुष, हर स्त्री, हर सम्प्रदाय, हर वर्ग और हर राष्ट्र अनगिनत समस्याओं में ग्रस्त है। ऐसा प्रतीत होता है कि समस्याओं का एक जंगल है, जिसमें मानव-जाति भटक रही है और मुक्ति की कोई राह नहीं पा रही है। लोगों को विश्वास था कि धर्मनिरपेक्ष-लोकतंत्र (Secular Democracy) उनकी समस्याओं का समाधान करेगा और उसके कारण दुनिया स्वर्ग बन जायेगी। मगर इस लोकतंत्र ने दुनिया को कभी समाप्त न होने वाली इच्छाओं, हितों के टकरावों, पूंजीवाद की लानत, राष्ट्रवादी संघर्षों और साम्राज्यवाद (Imperialism) के उपहार दिये। कम्युनिज़्म ने आगे बढ़कर समस्याओं के समाधान का दावा किया, किन्तु वह मनुष्य को जानवर के स्तर पर ले आया। उसने सरकारी पूंजीवाद और निकृष्टतम तानाशाही (Dictatorship) को जन्म दिया। मानवता से इसने केवल धर्म और नैतिकता का ही हरण नहीं किया, बल्कि सोचने, करने

और बोलने की सारी आज़ादियां भी छीन ली। अपने ही देश की जनता के विरुद्ध बड़े पैमाने पर क़त्ल और लूटमार तथा बर्बरता पूर्ण सज़ाओं का वह हंगामा खड़ा किया, जिसे सुनकर ही इंसान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और दूसरे देशों में साज़िशों और युद्धों के वे तूफ़ान उठाये, जिन्होंने तमाम साम्राज्यवादियों को पीछे छोड़ दिया।

फिर बात सिर्फ़ यह नहीं है कि ये दोनों प्रणालियां समस्याओं के हल में नाकाम और समस्याओं को और उलझा देने वाली हैं, बल्कि इससे बढ़कर बात यह है कि वे जीवन की समस्त समस्याओं का हल सिरे से ही पेश नहीं करतीं। लोकतंत्र एक राजनैतिक कार्य-पद्धति है, उसे अधिक-से-अधिक एक राजनैतिक प्रणाली कह सकते हैं। पूरी ज़िन्दगी की समस्त समस्याओं का हल लोकतंत्र में नहीं है।

यही हाल कम्युनिज़्म का है। वह वास्तव में एक आर्थिक प्रणाली है और उसके अलावा जो कुछ है, चाहे वह द्वन्द्ववादी भौतिक दर्शन हो या इतिहास की भौतिक व्याख्या, उसकी हैसियत समस्याओं के हल की नहीं, बल्कि आर्थिक हल को सही साबित करने की दलीलें या आर्थिक प्रणाली के स्तम्भों की है। रही उसकी राजनैतिक प्रणाली तो इस समय उसकी जो प्रणाली प्रचलित है वह एक अभिशाप है और जिस राजनैतिक हल का कम्युनिज़्म वादा करता है अर्थात् यह कि हुकूमत का विभाग ही सिरे से बाक़ी न रहे, वह वादा कभी पूरा हो सकेगा इसकी कोई संभावना दीख नहीं पड़ती। बहरहाल, यह मानना पड़ेगा कि कम्युनिज़्म की हैसियत एक आर्थिक प्रणाली की है इससे ज्यादा कुछ नहीं। फिर यह आर्थिक प्रणाली भी व्यक्तियों के पूंजीवाद को समाप्त करके सरकार की अत्यंत बुरी तानाशाही पूंजीवाद को जन्म देती है, जिसके सामने मज़दूर बेबस होता है; क्योंकि कम्यूनिस्ट स्टेट में जनता को विरोध प्रकट करने, हड़ताल, संगठन और प्रेस आदि को स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती। अतः हम कह सकते हैं कि इस्लाम के अतिरिक्त आज ऐसी कोई जीवन-प्रणाली मौजूद नहीं है, जो जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान हो।

फिर हमें एक ऐसी प्रणाली चाहिए जो सारे इंसानों के उचित और वास्तविक हितों और आवश्यकताओं को सामने रख कर बनाई गई हो। अगर कोई प्रणाली किसी विशेष सम्प्रदाय, वर्ग या राष्ट्र को सामने रखकर बनाई गई हो, तो उससे मानव-जाति की समस्याएं तो क्या हल होंगी, बल्कि स्वयं उस विशेष सम्प्रदाय, वर्ग या राष्ट्र की समस्याएं भी हल नहीं हो सकतीं; क्योंकि आज पूरी दुनिया एक इकाई है। कोई राष्ट्र अलग होकर अपनी समस्याएं हल नहीं कर सकता, जबकि अन्य राष्ट्रों की समस्याएं उलझी पड़ी हों। आज के मानव की बुनियादी ज़रूरत यह है कि एक ऐसी जीवन-प्रणाली हो, जो सभी सम्प्रदायों, जातियों, वर्गों और राष्ट्रों अर्थात् सम्पूर्ण मानव-जाति की समस्त समस्याओं का समाधान हो।

क्या ऐसी कोई प्रणाली मौजूद है? सत्य यह है कि मानव ने अब तक जितनी प्रणालियां पेश की हैं, उनमें ऐसी कोई प्रणाली नहीं है, जो संविधान और क़ानून विभिन्न क़ौमों ने बड़े सोच-विचार के बाद रचे हैं, वे किसी एक क़ौम या देश को सामने रखकर बनाये गये हैं और उनमें भी केवल पूंजीपति और शक्तिशाली वर्गों के हितों की रक्षा की गई है। स्वयं अपने देश के संविधान को देख लीजिए। उसे इस देश की आवश्यकताओं को सामने रखकर अच्छे दिमाग़ों ने प्रस्तुत किया है, किन्तु अभी कुछ ज़्यादा मुद्दत नहीं गुज़री है कि उसमें संशोधन पर संशोधन करने की आवश्यकता पड़ रही है और फिर भी वह जनता के हक़ की सुरक्षा में और कमज़ोर और पिछड़े हुए वर्गों की समस्याओं को हल करने में असफल है। अगर वह समस्याओं को हल करने में सफल भी होता तो उसका कार्य-क्षेत्र केवल भारत है। इसके बाहर के लोग और उनके मसले इस संविधान के सामने नहीं हैं। यही हाल दुनिया के तमाम संविधानों और क़ानूनों का है। सब के सब क़ौमी और स्वदेशी हैं।

हां, कम्युनिज्म क़ौमी और राष्ट्रीय हदों से ऊपर उठकर समस्याओं को हाथ में लेता है, मगर उसके सामने भी सारे इंसान नहीं, केवल मज़दूर हैं। रहे दुनिया के धर्म तो न तो वे सभ्य जीवन विशेषकर आज के सभ्य जीवन

की समस्त समस्याओं को हल करने की क्षमता रखते हैं और न तमाम इंसानों को समान दर्जा देकर उनके मामलों को हल करना चाहते हैं।

यह केवल इस्लाम ही है जो किसी एक सम्प्रदाय, जाति, वर्ग और राष्ट्र के बजाये समूची धरती पर बसने वाले तमाम इंसानों को समान रूप से सामने रखता है और उनकी समस्त समस्याओं का न्यायसंगत और व्यावहारिक हल पेश करता है। ऐसा हल जो साढ़े चौदह सौ साल पहले भी न्यायसंगत और व्यावहारिक था और उस युग की समस्याओं का एक बेहतरीन हल सिद्ध हुआ और आज के एटमी और अन्तरिक्ष युग की जटिल समस्याओं का भी न्यायसंगत और व्यावहारिक हल है। यही है एक मात्र, व्यापक, सर्वतोमुखी, न्यायसंगत और व्यावहारिक समस्त मानवों के लिए ईश्वरीय हल।

६. मानव-एकता

अब मानव-एकता को लीजिए। यह एक खुली हुई सच्चाई है कि सारी धरती एक है, मानव-जाति एक है, मानव-जाति का हित भी एक ही है। इस सच्चाई को आज से पहले इतना ज़्यादा महसूस नहीं किया जा सकता था क्योंकि क़ौमें अलग-अलग पड़ी हुई थीं और उनका एक दूसरे पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ता था। हां, जब कोई महान विजेता या महान समाज सुधारक पैदा होता तो अवश्य ये दूरियां कम हो जातीं और दूर-दराज़ के देश एक-दूसरे के निकट आ जाते। आज यातायात के तीव्र-गामी साधनों ने पूरी दुनिया को एक कर दिया। कुछ ही घंटों में हम दूर-दूर स्थानों पर पहुंच सकते हैं। जन संचार-साधनों का हाल यह है कि इंग्लैंड से ही नहीं, अमरीका से भी हम उसी क्षण समाचार और भाषण आदि सुन लेते हैं, जिस क्षण वे प्रसारित होते हैं। घातक और तेज़ रफ़्तार हथियारों ने पूरी दुनिया को ख़तरनाक मोड़ पर ला खड़ा किया है। दो देशों के पारस्परिक संघर्ष का पूरी दुनिया पर प्रभाव पड़ता है। किसी समय भी किसी एक स्थान पर होने वाला संघर्ष बड़ी शक्तियों की मूर्खता से विश्व-युद्ध और परमाणु-

युद्ध का रूप धारण कर सकता है। विकसित, प्रगतिशील और पिछड़े हुए देशों के हितों का टकराव विश्व-स्थिति को बद से बदतर कर रहा है और दुनिया की बड़ी और साम्राज्यवादी शक्तियां अपने हितों के लिए विश्व के देशों को युद्ध के भयंकर गढ़े में ढकेलने का दुराग्रह कर रही हैं। आज विभेद और संघर्ष के कारण और अवसर जितने पैदा हो गये हैं उतने कभी न थे, न पारस्परिक संघर्ष के परिणाम कभी इतने ख़तरनाक थे। आज मानव-जाति की एकता और एकता को बनाये रखने वाले साधनों और प्रेरकों की जितनी आवश्यकता है उतनी कभी न थी। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि दुनिया की विभिन्न प्रणालियों और धर्मों के पास फूट और संघर्ष को बढ़ाने के साधन तो हैं, एकता पैदा करने की कोई व्यवस्था नहीं।

इस्लाम के पास मानव-एकता क़ायम करने के लिए चार स्वाभाविक और मज़बूत बुनियादें हैं। वे बुनियादें ये हैं : एक प्रभु, एक इंसान, एक प्रणाली और एक हित। एक ईश्वर जो सम्पूर्ण जगत और समस्त मानव-जाति का पैदा करने वाला, मालिक, पालनहार और शासक है। उसको मालिक और शासक मानकर उसकी बन्दगी और आज्ञापालन करना, वह स्वाभाविक बुनियाद है, जिस पर मानव-जाति एक हो सकती है। सब इंसान एक ही जोड़े – आदम और हव्वा – की संतान हैं। इसलिए वे विभिन्न देशों और जातियों से सम्बद्ध होने के बावजूद एक ही परिवार के सदस्य हैं। उनका कल्याण विभिन्न और परस्पर विरोधी जीवन-प्रणालियों को अपनाने में नहीं है। ये प्रणालियां तो अपूर्ण और घातक हैं और एक दूसरे के प्रतिकूल भी। उनका कल्याण तो इस में है कि वे एक ईश्वर की दी हुई उस जीवन-प्रणाली को ग्रहण करे, जो सारे इंसानों के लिए न्याय, सर्वतोमुखी उन्नति और लोक-परलोक की सफलता की गारंटी देती है। सब इंसानों का वास्तविक हित एक है और वह है आख़िरत की शाश्वत सफलता और ईश्वरीय प्रसन्नता की प्राप्ति, जो निष्ठाभाव से ईश्वर की बन्दगी और उसके दीन की सच्ची पैरवी करने से हासिल होता है। इसके नतीजे में व्यक्तियों, सम्प्रदायों, वर्गों और क़ौमों की ज़िन्दगियों में ऐसा सुधार आ जायेगा कि

वे अपने उचित-अनुचित हितों के लिए लड़ाई और संघर्ष करने के बजाए, दूसरे के हक़ की अदायगी को अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे और दानशीलता और त्याग का रवैया अपनाकर मानव की सेवा की राह पर चल पड़ेंगे, क्योंकि इसी में उनको लोक-परलोक की सफलता प्राप्त होगी।

८. सुख और शान्ति

अब सुख और शान्ति को लीजिए! इस चीज़ का आज पूरी दुनिया में अभाव है। निर्धन और पिछड़े देश के लोग तो अपनी कठिनाइयों और मुश्किलों के कारण बेचैनी के शिकार हैं, लेकिन जो अत्यन्त उन्नतिशील और धनवान देश हैं उनमें भी कम बेचैनी नहीं है। रूस की असाधारण पाबंदियों से परेशान होकर लोग ऐसे देशों में शरण लेने पर विवश थे, जहां वे स्वतंत्र रूप से सांस ले सकें और काम और विचार की आज़ादी पा सकें। अमरीका के लखपतियों और करोड़पतियों की औलाद हिप्पियों के रूप में शांति की खोज में मारी-मारी फिर रही है। पाश्चात्य देशों में नैतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समस्याएं पूर्वी देशों से कम नहीं हैं। कुछ पहलुओं से इन देशों का हाल पूर्व से ज़्यादा ख़राब है। एक इंसान दूसरे इंसान पर भरोसा किये बिना जीवन व्यतीत नहीं कर सकता, लेकिन लोगों का चरित्र इतना गिर चुका है कि उनपर भरोसा करना स्वयं को धोखा देना है। प्रेम और सेवा की जगह घृणा, स्वार्थ और अविश्वास ने ले ली है। हर एक को अपनी पड़ी हुई है। घर, जहां इंसान को शांति मिलती थी, अब वहां बेचैनी ही बढ़ती है। पति और पत्नी, मां-बाप और संतान और भाई-भाई में मुहब्बत और वफ़ादारी का वह रिश्ता नहीं रहा, जिससे शांति की दौलत मिलती थी। पश्चिम में तो पारिवारिक व्यवस्था बिल्कुल अस्त-व्यस्त हो चुकी है और मुहब्बत और वफ़ादारी नाम मात्र को भी नहीं बची है। झूठ, धोखा, बेवफ़ाई, साज़िश, जोड़-तोड़, शोषण, ज़ुल्म और गद्दारी जैसी चीज़ों ने महामारी का रूप धारण कर लिया है। इन्हीं चीज़ों के परिणामस्वरूप यह दुनिया बेचैनी और अशांति का गढ़ बन गई

है। सांसारिक हितों, भोग-विलास और रंगीनियों की लालसा बढ़ती ही चली जा रही है और वह किसी सीमा पर रुकने का नाम ही नहीं लेती। इन इच्छाओं और मनोकामनाओं की पूर्ति नहीं होती और न हो सकती है। परिणाम स्पष्ट है। हर दिल बेक़रार है और पूरी दुनिया बेचैनी का गहवारा बन चुकी है।

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले॥

आख़िरत की स्थाई नेमतों के मिलने का विश्वास, दुनिया की महरूमी और दुःखों के एहसास को हल्का कर सकता है, किन्तु यह विश्वास भी अब या तो बिल्कुल समाप्त हो चुका है या अफ़सोसनाक हद तक कमज़ोर हो चुका है। ईश्वर का स्मरण, उससे प्रेम और उसपर भरोसा, कठिनाइयों और परेशानियों में असाधारण ढाढ़स का कारण सिद्ध होता था, लेकिन आज का इंसान इन नेमतों से बिल्कुल वंचित है। इसी वजह से सुख और शांति भी उसे नसीब नहीं और दुनिया में यह ईश्वर की सबसे बड़ी देन थी, जिससे आज का इंसान वंचित हो चुका है।

इंसान सुख और शांति उसी समय प्राप्त कर सकता है, जब उसे वास्तविक स्वतंत्रता हासिल हो। उसे आदर और सम्मान प्राप्त हो। उसे न्याय मिल रहा हो। मानव-समाज नैतिक मूल्यों पर संगठित हो। लोग चरित्रवान और भरोसे के लायक़ हों। उनमें परस्पर भाईचारा और प्रेम पाया जाता हो। वे एक-दूसरे के दुःख-दर्द में काम आने वाले और एक दूसरे का सहारा बनने वाले हों। प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यापक विकास के अवसर उपलब्ध हों। सारे इंसानों के सारे ही मसले हल हों। लोगों के बीच संघर्ष और कशमकश के बजाये संधि और सहयोग, एकता और मेल-जोल का वातावरण पाया जाए। सांसारिक लाभों की लालसा में पड़ने के बजाये उनकी वास्तविक इच्छा ईश्वर की प्रसन्नता और आख़िरत की शाश्वत सफलता प्राप्त करनी हो। प्रभु के स्मरण और उसके प्रेम से उनके हृदय परिपूर्ण हों। इंसान को इसपर पूरा विश्वास हो कि ईश्वर ही उसका सहायक

और उसकी कठिनाइयों को दूर करने वाला है। उसे उसकी कृपा और मदद पर पक्का भरोसा हो और उसे इसकी पूरी आशा हो कि उसके भले कर्मों का बदला उसका प्रभु अवश्य देगा। ये सारी नेमतें इस्लाम और केवल इस्लाम इंसानों को प्रदान करता है। क़ुरआन में है –

'सुन लो, अल्लाह के स्मरण ही से दिलों को शांति मिलती है।'

–रअद : २८

'अल्लाह से जुड़े रहो। वही तुम्हारा संरक्षक–मित्र है। कितना अच्छा संरक्षक मित्र है! कितना अच्छा मददगार है!

(हज : ७८)

९. ईश्वर की प्रसन्नता

इंसान की सफलता और कामयाबी की एक अति महत्वपूर्ण बुनियाद यह है कि उसका स्रष्टा, स्वामी, पालनहार और शासक, प्रभु उससे प्रसन्न हो। वह प्रभु जो दुनिया की सारी नेमतों को पैदा करने वाला और मालिक है, जिसके हाथ में इंसान की क़िस्मत और उसकी इज़्ज़त व ज़िल्लत है, जिसके अधिकार में लोगों और राष्ट्रों का उत्थान और पतन है। आदमी को जो कुछ मिलता है उसी के देने से मिलता है और उसी के छीन लेने से छिन जाता है। वह अगर किसी इंसान को देना न चाहे तो कोई उसे दे नहीं सकता और अगर वह किसी को देना चाहे, तो कोई उसे वंचित करने वाला नहीं। उस प्रभु की प्रसन्नता दुनिया में इंसान का सबसे बड़ा सहारा मन व आत्मा की शांति का सबसे बड़ा स्रोत है।

ईश्वर की प्रसन्नता कैसे प्राप्त होगी? इसका एक ही जवाब है और वह यह कि हम वास्तव में उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हों। हमारी सारी दौड़–धूप का असल उद्देश्य उसको प्रसन्न करना हो। हम दुनिया में वही कार्य करें, जिन्हें हमारा प्रभु पसन्द करता है और ऐसे कामों से दूर भागें जिन्हें वह नापसन्द करता है। अर्थात् हम अपने जीवन को उसकी प्रसन्नता और उसके दीन के सांचे में ढाल दें, जो मनुष्य की सांसारिक सफलता और पारलौकिक मुक्ति की ज़मानत देता है।

अब सवाल यह पैदा होता है कि ईश्वरीय धर्म आख़िर है कहां? यहां आकर आम आदमी सख़्त परेशानी में पड़ जाता है। वह देखता है कि दुनिया में और स्वयं उसके अपने देश में अनेक धर्म पाये जाते हैं और उनमें से हर एक अपने को सत्य घोषित करता है। आदमी उनमें से किसे सच्चा और ईश्वरीय धर्म स्वीकार करे। कुछ लोग धर्म के इस जंगल को देखकर धर्म ही का इनकार कर देते हैं और ईश्वर से आज़ाद होकर जीवन व्यतीत करने में ही अपनी सुरक्षा समझते हैं। लेकिन अगर कोई ईश्वर है और वह इस जगत् का स्रष्टा, स्वामी, पालनकर्ता और शासक है, तो यह सुरक्षा और सफलता का रास्ता नहीं, खुली हुई नाकामी और तबाही का रास्ता है और सत्य यह है कि ईश्वर के इनकार और भौतिकवाद के लिए अब कोई बुनियाद बाक़ी नहीं है। विज्ञान की नवीनतम खोजों और मानवीय अनुभवों और विचारों ने वास्तविकता के इनकार को असंभव बना दिया है। सभी आधार ढह चुके हैं और ईश्वर का इनकार विज्ञान, बुद्धि, अनुभव, हर चीज़ का इनकार है।

कुछ लोग इस झंझट से बचने के लिये यह मशविरा देते हैं कि जिस तरह इंसान का दिल कहे, उस तरह वह ईश्वर से लौ लगा ले और अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ का पालन करे। लेकिन पहली बात तो यह है कि अन्तर की आवाज़ धीमी होती है, जिसे हर एक सुन नहीं सकता, दूसरे यह आवाज़ एक-दूसरे से भिन्न भी हो सकती है और साथ ही वह मनुष्य को अपनी इच्छाओं, विचारों और गुमानों से प्रभावित भी होती है। इस प्रकार यह तो ईश्वर की मर्ज़ी पर नहीं, अपनी मर्ज़ी पर चलना हुआ। यह ईश्वर के धर्म और उसके विधान की नहीं, अपने विचारों और गुमानों की पैरवी हुई। इस नीति को अपना कर हम किस तरह यह आशा कर सकते हैं कि हमारा प्रभु हम से प्रसन्न होगा। ईश्वर तो हमसे उस समय प्रसन्न होगा, जब हम एकाग्रचित्त होकर उसकी मर्ज़ी पर चलें और अपने या दूसरे इंसानों के विचारों और गुमानों का अनुसरण करने के बजाये उसके भेजे हुए धर्म और उसके द्वारा निर्मित विधान का पालन करें और यह बात हमें मालूम

भी है कि ईश्वर अपने सर्वश्रेष्ठ बन्दों के द्वारा अपनी मर्ज़ी से मनुष्यों को अवगत कराता रहा है और अपने संदेशवाहकों के द्वारा अपना धर्म मानव-जाति तक पहुंचाता रहा है। इस धर्म को अपनाने के बजाये अपने-अपने विचारों या अन्तर्मन कीआवाज़ को अपनाने का परिणाम इसके सिवा कुछ न निकलेगा कि कोई जीवन-प्रणाली तो स्थापित न हो सकेगी, किन्तु ईश्वर और धर्म के नाम पर लोग विभिन्न और विपरीत राहें अपनायेंगे और मानव-समाज फूट, हिंसा और अव्यवस्था की भेंट चढ़ जायेगा, जैसा कि आज हम अपने देश भारतवर्ष में देख रहे हैं।

यह बात किसी तरह अक्ल में नहीं आती कि ईश्वर ने मानव-जाति की रहनुमाई और उसकी सांसारिक और पारलौकिक सफलता के लिए बहुत-से ऐसे धर्म भेजे हों-जो परस्पर भिन्न और एक-दूसरे के विपरीत हों। यह चीज़ ईश्वर की तत्व-दर्शिता, उसके न्याय और उसकी दयालुता सबके विरुद्ध है। निस्संदेह उसने मानव-जाति को कोई एक ही राह दिखाई होगी और एक ही सत्य-धर्म होगा, जो उसने इंसानों की सफलता और कल्याण के लिए भेजा होगा। हम अगर वास्तव में दुनिया और आख़िरत दोनों में सफलता और कल्याण चाहते हैं और इस संबंध में बिल्कुल गंभीर और एकाग्रचित्त हैं, तो हमें अपना दिमाग़ और अपना समय इस महान् और मौलिक उद्देश्य में लगाना होगा कि ईश्वर की प्रसन्नता किस चीज़ में है और उसका भेजा हुआ सत्य-धर्म कहां है?

हम कैसे जानें कि फ़लां किताब ईश्वर की किताब है और फ़लां क़ानून ईश्वरीय क़ानून है? इसकी पहचान यह है कि -

- वह साफ़ और स्पष्ट शब्दों में स्वयं एलान करे कि वह ईश्वरीय ग्रन्थ है और उसमें जो क़ानून है, वह ईश्वर का क़ानून है।
- उसमें कोई बात ज्ञान और बुद्धि के विरुद्ध न हो।
- उसमें कोई चीज़ सभ्यता और शिष्टता से गिरी हुई और अश्लील न हो।

❑ वह नस्ल, रंग, देश, भाषा और पेशे के आधार पर इंसानों में भेद-भाव पसन्द न करे।

❑ वह मनुष्य के सर्वांगीण विकास की ज़मानत दे।

❑ वह सारे इंसानों की समस्त जीवन-समस्याओं का हल हो।

❑ उसके अनुसार व्यक्ति, समाज और राज्य का जो निर्माण होता हो, इतिहास साक्षी हो कि वह एक व्यावहारिक जीवन-प्रणाली है और इंसानों की समस्याओं का हल उसके हित व कल्याण का कारण भी है।

❑ वह किसी विशेष युग में नहीं, हर युग में व्यावहार योग्य और जीवन-समस्याओं का हल हो और आज भी हो।

❑ वह स्पष्ट शब्दों में एलान करे कि ईश्वर की प्रसन्नता उसके पालन में है और उसे न अपनाने का नतीजा उसकी नाराज़गी और क्रोध की शक्ल में ज़ाहिर होगा।

❑ वह सुरक्षित और प्रामाणिक रूप में मौजूद हो।

ये दस कसौटियां हैं, जायज़ा लेकर देखिए कि कौन-सी पुस्तक और धर्म इनपर पूरे उतरते हैं।

जैन धर्म जगत्-स्रष्टा का इनकार करता है, इसलिए वह इस सूची में नहीं आता।

गौतम बुद्ध स्पष्टत: ईश्वर का इनकार नहीं करते, परन्तु वे ईश्वर और उसके क़ानून से मुक्त होकर जीवन के दु:खों का इलाज करना चाहते हैं। फिर ये दोनों धर्म संसार-त्याग और सन्यास की शिक्षा देते हैं। इसलिए जीवन की समस्याओं के हल के लिए कोई जीवन-प्रणाली, इनके पास नहीं है।

हिन्दू धर्म की मूल पुस्तक 'वेद' यह दावा नहीं करती कि वह ईश्वर की ओर से है। उसके मंत्रों के हर संकलन के साथ उस ऋषि का नाम होता है, जिसने उसे रचा होता है। कुछ मंत्रों के अन्दर ही ऋषि का नाम मिलता

है। ऋषि अगर पुरुष है तो क्रिया पुरुष लिंग में है, अगर ऋषि स्त्री है तो स्त्री लिंग में है। यह इस बात का सबूत है कि 'वेद' ईश्वर की नहीं बहुत से ऋषियों की रचना है।

बाईबिल जिस शक़्ल में आज मौजूद है, उसका हाल भी यही है। प्राचीन नियमों की पुस्तक (Old Testament) इस बात का दावा नहीं करती कि वह ईश्वरीय पुस्तक है। यही हाल नवीन नियमों की पुस्तक (New Testament) अर्थात् इंजीलों का है। दोनों के विषयों और शब्दों से स्पष्ट है कि वे ईश्वर की नहीं, इंसानों की तैयार की हुई हैं। हम यह भी नहीं जानते कि बाईबिल के विभिन्न ग्रन्थों और इंजीलों को किन व्यक्तियों ने कब तैयार किया।

'वेदों' में सम्पूर्ण जीवन के लिए कोई प्रणाली नहीं है। स्मृतियों में क़ानून बयान हुआ है, मगर उस क़ानून को ईश्वरीय क़ानून नहीं माना जाता। स्मृतियों में परस्पर बड़ा मतभेद भी हैऔर फिर यह कि स्मृतियों के क़ानून न तो न्यायसंगत हैं और न संतुलित और न आज की जटिल समस्याओं का हल है। आज का हिन्दू समाज तक उन्हें नहीं अपना सकता। ऊंच-नीच और छूत-छात का घातक नासूर स्मृतियों ही के क़ानून की देन है।

प्राचीन नियमों की पुस्तक अर्थात् तौरात का बुनियादी क़ानून क़ुरआन से मिलता-जुलता है, लेकिन उसके विस्तृत क़ानून व्यर्थ और आज की जटिल समस्याओं के हल की दृष्टि से बेकार है। नवीन नियमों की पुस्तक अर्थात् इंजीलें केवल नैतिक शिक्षाओं पर आधारित हैं, और जीवन-प्रणाली और क़ानून से बिल्कुल खाली है।

दुर्भाग्य से इस समय क़ुरआन के अतिरिक्त अन्य धार्मिक पुस्तकें जिस रूप में मौजूद हैं, उनमें बहुत-सी बातें ज्ञान और बुद्धि के विपरीत हैं और सभ्यता और शिष्टता से गिरी हुई भी। क़ुरआन के अतिरिक्त कोई अन्य धार्मिक पुस्तक सुरक्षित और प्रमाणिक रूप में आज मौजूद नहीं है, न वेद, न बाइबिल, न महावीर स्वामी और न गौतम बुद्ध की शिक्षाएं :- इतिहास

हमें यह भी नहीं बताता है कि वेद, बाइबिल और अन्य धार्मिक पुस्तकों की शिक्षाओं को अपनाने के फलस्वरूप कैसे व्यक्ति बने और कैसा समाज सामने आया और किस प्रकार के राज्य का निर्माण व गठन हुआ। धर्मों का इतिहास आमतौर से कहानियों में गुम है और ऊंचे-ऊंचे धार्मिक गुरुओं, अवतारों और देवताओं तथा बाइबिल के नबियों और पेशवाओं की ज़िन्दगी जिस रूप में पेश की गई हैं; वह नैतिक दृष्टि से अत्यंत घिनौनी हैं। अक़्ल यह स्वीकार करने को तैयार नहीं कि ये विभूतियां इतनी गिरी हुई हो सकती हैं।

❒ केवल क़ुरआन ही वह पुस्तक है, जो आरम्भ से अन्त तक एक बार नहीं सैकड़ों बार स्पष्ट शब्दों में एलान करती है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ईश्वर के रसूल (संदेशवाहक) हैं, क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है और इस्लाम ईश्वर का अवतरित किया हुआ सत्य-धर्म है।

❒ क़ुरआन में बुद्धि और ज्ञान और सभ्यता एवं शिष्टता के विरुद्ध कोई बात नहीं पाई जाती।

❒ क़ुरआन नस्ल, देश, रंग, भाषा या पेशे के आधार पर इंसानों में कोई भेद-भाव नहीं करता।

❒ इस्लामी जीवन-प्रणाली मनुष्य के सर्वांगीण विकास की गारंटी देती है और वह तमाम मनुष्यों की समस्त जीवन-समस्याओं का हल है।

❒ इतिहास के प्रामाणिक रिकार्ड से साबित है कि इस्लामी शिक्षाओं को अपनाने के फलस्वरूप लाखों व्यक्ति आदर्श व्यक्ति बन गये, जो समाज निर्मित हुआ वह बेहतरीन और आदर्श समाज था और जो राज्य गठित हुआ, वह आदर्श और मानव-इतिहास का बेहतरीन राज्य था, जिससे इंसानों का सर्वव्यापी विकास हुआ और उनकी समस्त समस्याएं हल हुईं।

❒ आज भी हम इस्लामी प्रणाली को व्यावहारिक और सब इंसानों की समस्त समस्याओं के हल के रूप में पाते हैं।

❒ क़ुरआन साफ़ और स्पष्ट शब्दों में बार-बार एलान करता है कि इस्लाम ही सत्य-धर्म है, ईश्वरीय प्रसन्नता उसे स्वीकार करके उसका

पालन करने से हासिल होगी, उसे अस्वीकार करने का परिणाम ईश्वर की नाराज़गी और यातना के रूप में ज़ाहिर होगा।

❑ न केवल यह कि क़ुरआन अपने मूल शब्दों में और प्रामाणिक रूप में मौजूद है, बल्कि उसकी विस्तृत व्याख्या भी 'सुन्नत' (रसूल की जीवन-चर्या) के रूप में सुरक्षित है। क़ुरआन के लाने वाले नबी की जीवनी भी पूरे विस्तार के साथ सुरक्षित है। इन शिक्षाओं को अपना लेने से जैसे व्यक्ति बने, जैसा समाज गठित हुआ, जैसे राज्य का आविर्भाव हुआ – ये सारी बातें कहानी के रूप में नहीं, इतिहास के प्रामाणिक रिकार्ड के रूप में सुरक्षित हैं।

१०. परलोक की शाश्वत सफलता

अब अन्तिम, किन्तु सबसे महत्वपूर्ण चीज़ को लीजिए। अगर मरना है और मरने के बाद ईश्वर के सामने उपस्थित होना है और निस्संदेह उपस्थित होना है, अगर हिसाब-किताब के बाद इनाम और सज़ा है, स्वर्ग और नरक है, शाश्वत जीवन में असीम, स्थाई और अपार नेमतें हैं या भयंकर, दर्दनाक और अपमानित कर देने वाला अज़ाब – और यह सब भी सत्य है – तो प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक समाज और सम्पूर्ण मानव-जाति की सबसे मौलिक समस्या यह है कि उसे आख़िरत की शाश्वत सफलता प्राप्त हो और उसे स्थाई और दर्दनाक अज़ाब से मुक्ति मिले और वही प्रणाली मानवता के हक़ में दायमी समझी जायेगी, जो मानव-जाति को आख़िरत की शाश्वत सफलता की प्राप्ति और स्थाई अज़ाब से मुक्ति की राह दिखाए।

दुनिया की अस्थाई सफलता हो या आख़िरत की स्थाई कामयाबी। ये दोनों ही अविनाशी प्रभु के हाथ में हैं और ईश्वर की इच्छा और उसके अवतरित किये हुए सत्य-धर्म इस्लाम का पालन करके ही हम दुनिया की कामयाबी और आख़िरत की सफलता एवं मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

यह है इस्लाम – ईश्वर की सबसे बड़ी देन – मानव जाति के लिए दयालुता एवं नेमतों से परिपूर्ण जीवन-प्रणाली।

इस्लाम की शिक्षा यह है कि केवल एक ईश्वर की बन्दगी और पूजा करो, उसके अलावा और कोई पूजने और बन्दगी के योग्य नहीं, उसके भेजे हुए सारे पैग़म्बरों और सन्देष्टाओं पर , जिसकी अन्तिम कड़ी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं और तमाम ईश्वरीय ग्रन्थों पर और अन्तिम ईश-ग्रन्थ क़ुरआन पर ईमान लाओ और ईश्वर के भेजे हुए धर्म 'इस्लाम' को, जो प्रत्येक युग में मानव की सफलता और कल्याण के लिए आया और जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर पूरा हुआ, स्वीकार करके अपनी ज़िन्दगी उसकी शिक्षाओं के सांचे में ढालो और दुनिया के तुच्छ और अस्थाई हितों के बजाये आख़िरत की शाश्वत सफलता और मुक्ति को अपने प्रयासों का लक्ष्य बनाओ।

इस्लाम किसी विशेष सम्प्रदाय, जाति या वर्ग के लिए ख़ास नहीं है, बल्कि वह सारे इंसानों के लिए है। यह उनके स्वामी, शासक, पालनहार प्रभु की ओर से अवतरित धर्म है। वह उन लोगों का है जो उसे ग्रहण करें। जो लोग उसे अपनायेंगे दुनिया और आख़िरत में कामयाब और सफल होंगे और जो लोग उसे रद्द कर देंगे, वे दोनों लोक में अपमानित, असफल और ईश्वर की भीषण यातनाओं के भागी होंगे।

हम मुसलमानों से कहते हैं कि वे निष्ठाभाव से और एकाग्रचित्त होकर इस सम्पूर्ण प्रणाली को अपनायें, ताकि वे अपने लिए, अपने समाज के लिए, अपनी क़ौम और अपने देश के लिए और सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए, दया की मूर्ति बन सकें। हम उनसे कहते हैं कि इस जीवन-प्रणाली का परिचय बड़े पैमाने पर देशवासियों से करायें, ताकि वे भी इस नेमत से लाभान्वित हो सकें और हमारा देश कठिनाइयों, दुखों, समस्याओं और परेशानियों से छुटकारा पा सके। जो लोग यह कार्य करेंगे वे देश के सबसे बड़े उपकारी और मुक्तिदाता होंगे और ईश्वर की प्रसन्नता और परलोक की स्थाई सफलता उन्हें प्राप्त होगी।

हम अपने देश के ग़ैर-मुस्लिम भाइयों से कहते हैं कि यह दयायुक्त जीवन-प्रणाली मुसलमानों की मीरास नहीं है। यह जितनी उनकी है, उतनी ही आप की भी है। यह सबके प्रभु की ओर से उसके सभी बन्दों के लिए है। आप इसका गंभीरता के साथ विस्तारपूर्वक गहरा अध्ययन करें। साथ ही गिड़गिड़ा कर प्रभु से प्रार्थना भी करें कि वह आप को सत्य-मार्ग दिखाये और सत्य-मार्ग पर चलने की शक्ति दे। यह किसी और का नहीं, आप का अपना मसला है। आपकी सफलता व कल्याण, लौकिक पारलौकिक सफलता का मसला है। आप इस दयायुक्त प्रणाली को अपनायेंगे, तो दुनिया और आख़िरत में कामयाब और सफल होंगे। इससे मानव-जाति को परिचित करायेंगे, तो उसके उपकारक और मुक्ति दिलाने वाले बनेंगे और इसे लागू करेंगे तो ईश्वर की इच्छा की पूर्ति करने का श्रेय आपको प्राप्त होगा और अपने देश को कठिनाइयों और आपदाओं से निकालकर यहां के सारे इंसानों की समस्त समस्याएं हल करेंगे और मानव-जगत के लिए एक आदर्श समाज और एक आदर्श राज्य का नमूना स्थापित करेंगे। अगर इसे नहीं अपनायेंगे तो अपना, अपने समाज का, अपने देश और मानव-जाति का बड़ा नुकसान करेंगे।